

जगदिश के गुण को जिसने भी अपने मुख से जो गाया है



जगदिश के गुण को जिसने भी,
अपने मुख से जो गाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

तर्ज – दिल लुटने वाले ।

ये भी उनकी ही माया है,
दर जिसने उसे बुलाया है,
जितना जगदीश ना भाया है,
उतना जगदीश को भाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण क्या
भाग्य लिखाकर आया है,
जो कण्ठ प्रभु मन भाया है,
जन्म उसी का धन्य हुआ,
छुटी जो जग की माया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण पूर्ण समर्पित भाव जगे,
प्रभु चरणों में मेरा ध्यान लगे,
हृदय द्रवित हो नेन बहे,
अश्रु बन पुष्प चड़ाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण फिर
देर नहीं कोई फेर नहीं,
यहाँ देर नहीं अन्धेर नहीं,
आवाज पे सारे साज बजे,
उस साज ने साज बजाया है

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना किसी भी शुल्क के आप अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



जगदिश के गुण ये प्रेम
नगर हे प्रेम करें,
यहाँ नेम नहीं बस भाव धरें,
यहाँ विधी विधान का काम नहीं,
वो प्रेम वशीभूत आया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

जगदिश के गुण को जिसने भी,
अपने मुख से जो गाया है,
क्या मांगु यह भी भूल गया,
पाए का पार ना पाया है।bd।

रचनाकार – श्री सुभाषचन्द्र जी त्रिवेदी ।
7869697758